मॉड्यूल – कोविड 19 – स्कूल पुनः खोलना

भाग – 1

कोविड–19 की परिस्थिति में विद्यालय को पुनः खोलने की आवश्यकता

भाग – 2

हितधारकों से संवाद और उनको प्रेरित करना तथा विद्यालय को पुनः खोलने में विभिन्न चुनौतियों को केस स्टडी के माध्यम से समझना

भाग – 3

विद्यालय को पुनः खोलने की चुनौतियों का समाधान एवं कक्षा–शिक्षण को रोचक बनाने हेतु प्रयास

शीर्षक :
वर्तमान कोविड-19 की परिस्थिति में विद्यालय को पुनः खोलना

उद्देश्य :

1. कोविड-19 की परिस्थिति में विद्यालय को पुनः खोलने की प्रक्रिया हेतु घटकों की पहचान कर सकेंगे।
2. कोविड-19 की परिस्थिति में विद्यालय को पुनः खोलने में हितधारकों की भूमिका को समझेंगे।
3. विद्यालय प्रमुख, वर्तमान विषम परिस्थतियों में विद्यालय को पुनःखोलने की प्रक्रिया से संबंधित चुनौतियों की पहचान कर समाधान करने में सक्षम होंगे।

की-वर्ड – विद्यालय पुनः खोलने, कोविड-19, टीकाकरण, हितधारक, प्रौद्योगिकी।

प्रस्तावना

विश्व में नवम्बर 2019 से वर्तमान समय तक एक महामारी कोविड-19 ने पूरी दुनिया के साथ-साथ हमारे देश को भी प्रभावित किया है, जिससे मानव जाति के अस्तित्व को खतरा बना रहा। इस महामारी से बचाव के लिए सामाजिक दूरी सबसे महत्त्वपूर्ण सावधानी थी। मानव जाति के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए पिछले 18 महीने में देश में लॉक डाउन की स्थिति क्रमशः लागू रही। देश में आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक और शैक्षणिक गतिविधियों को बंद रखा गया, सिर्फ अत्यावश्यक सेवाएं ही संचालित रहीं जिसमें अन्य विभागों के कर्मचारी भी शामिल रहे। सबसे ज्यादा शिक्षकों को भी इन अत्यावश्यक सेवाओं में लगाया गया।

इन सब परिस्थिति के कारण शिक्षण व्यवस्था अत्यधिक प्रभावित हुई है। लॉक डाउन में सभी क्रियाकलापों हेतु प्रौद्योगिकी का अधिक से अधिक उपयोग किया गया। शिक्षण व्यवस्था भी प्रौद्योगिकी आधारित संचालित की गई, लेकिन शिक्षण कार्य को प्रौद्योगिकी आधारित करने में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ा। औपचारिक शिक्षा के लिये, शालेय शिक्षा के आलावा कोई विकल्प नहीं होता। जिसके कारण विद्यार्थियों के अधिगम में क्षति को देखा गया। अतः विद्यालयों को पुनः खोलने की आवश्यकता को महसूस किया गया। विश्व में वृहद स्तर पर टीकाकरण होने के कारण, कोविड-19 का खतरा कम हुआ। धीरे-धीरे आर्थिक, औद्योगिक, सामाजिक और शैक्षणिक गतिविधियां पुनः संचालित होने लगी। इसी दिशा में विद्यालयों को पुनः खोलने की प्रक्रिया भी शुरू हुई। विद्यालय को पुनः खोलने की प्रक्रिया के संबंध में आपके मस्तिष्क में बहुत से सवाल उठे होंगे जैसे -

1) विद्यालय को पुनः खोलने में प्रधानाध्यापक को क्या-क्या तैयारी करना चाहिए?

2) विद्यालय को पुनः खोलने में क्या -क्या चुनौतियाँ होगी?

3) विद्यालय को पुनः खोलने पर सीखने- सिखाने की क्या रणनीति होंगी?

4) विद्यालय को पुनः खोलने में समुदाय को किस तरह शामिल किया जाए?

इस मॉड्यूल को पढ़कर हम उपरोक्त सवालों के जवाब प्राप्त कर सकेंगे तथा विद्यालय को पुनः खोलने में विद्यालय प्रमुख की भूमिका को केस स्टडी द्वारा समझेंगे।

भाग - 1 :
कोविड-19 की परिस्थिति में विद्यालय को पुनः खोलने की आवश्यकता

उद्देश्य :

1. बच्चों की शालेय शिक्षा के महत्व को जानना।
2. कोविड- 19 का शिक्षक एवं विद्यार्थियों पर प्रभाव तथा विद्यार्थियों की अधिगम क्षति की प्रतिपूर्ति हेतु किए गए प्रयासों को जानना।

1.1 बच्चों की शालेय शिक्षा के महत्व को जानना

लॉकडाउन अवधि में विद्यालय बंद होने के कारण DigiLEP, मोहल्ला कक्षाएं, 'हमारा घर, हमारा विद्यालय' आदि तरीकों से शिक्षण प्रक्रिया को जारी रखा गया इसके बावजूद बच्चों में अधिगम क्षति हुई है क्योंकि औपचारिक शालेय शिक्षा का कोई प्रभावी विकल्प नहीं हो सकता है। शैक्षणिक गतिविधियों से समाज के सबसे महत्त्वपूर्ण घटक (नींव और भविष्य) को शामिल करना पड़ता है अतः इन सब बिंदुओं को दृष्टिगत रखते हुए विद्यालयों को पुनः प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया।

कोविड 19 के दौरान शासन एवं शिक्षकों ने बच्चों की शिक्षा के लिए अनेक कदम उठाये। किसी भी प्रकार से बच्चों की पढ़ाई बाधित न हो इसके बाद भी बच्चों के सीखने की संतोष जनक स्थिति नहीं रही। क्योंकि शिक्षक और छात्र के बीच परस्पर संवाद प्रत्यक्ष रूप से नहीं हुआ अतः बच्चों का विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करना अति महत्त्वपूर्ण है। इस सम्बन्ध में RTE, NEP द्वारा शालेय शिक्षा हेतु तय किए गए प्रावधान निम्नलिखित हैं -

AIIMS के निर्देशक डॉ. रणदीप गुलेरिया ने कहा कि विद्यालय को पुनः खोलने के लिए सरकार को विचार करना चाहिए। डॉ. गुलेरिया के अनुसार विद्यालय खुलने के कारण हमारे बच्चों के लिए सिर्फ सामान्य जीवन देना ही नहीं बल्कि एक बच्चे के समग्र विकास में (शालेय शिक्षा का महत्व बहुत मायने रखता हैं, जो कि लॉक डाउन के कारण) प्रभावित हो रहा है। अतः Onlilne या अन्य वैकल्पिक माध्यमों से शिक्षण के स्थान पर स्कूल जाकर शिक्षा ग्रहण करना ज्यादा जरूरी है।

1) शिक्षा का अधिकार (Right To Education) अंतर्गत -

- RTE अनुसार अनिवार्य और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए प्राथमिक स्तर पर 200 कार्य दिवस।
- माध्यमिक स्तर पर 220 दिवस की शालेय शिक्षा को अनिवार्य बताया गया है।
- साथ ही यह निर्देशित किया गया है कि, शिक्षा ऐसी हो जो राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता निर्भीकता का भाव उत्पन्न करें, अतः उक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये शालेय शिक्षा बहुत महत्व रखती है।

2) नई शिक्षा नीति (New Education Policy 2020) -

- विद्यालय में विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना।
- NEP 2020 के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा माध्यमिक कक्षाओं से पढ़ाया जाना हैं, इसलिए स्कूल की तैयारी अति आवश्यक है।
- विद्यालय प्रमुखों, शिक्षकों, विद्यार्थियों, सहयोगी स्टॉफ, माता-पिताओं और स्थानीय नागरिकों के बड़े और जीवंत समूहों के आधार पर संसाधनों का कुशल उपयोग करते हुए स्कूल तैयारी की योजना से पूरी शिक्षा व्यवस्था ऊर्जावन और समर्थ होगी।

1.2 कोविड- 19 का शिक्षक एवं विद्यार्थियों पर प्रभाव तथा विद्यार्थियों की अधिगम क्षति की प्रतिपूर्ति हेतु किए गए प्रयासों को जानना।

कोविड-19 की महामारी के कारण मार्च 2020 में लगभग 6 माह स्कूल बंद रहे एवं इस लॉक डाउन में शिक्षक भी निम्नानुसार प्रभावित हुए -

- विद्यालयों में नियमित शिक्षण की प्रक्रिया अचानक बंद हो गई।
- शिक्षकों को शिक्षण कार्य एवं मोहल्ला क्लास में विद्यार्थियों को पढ़ाना पड़ा, जिससे वो भी कोविड-19 के खतरे से डरे सहमे रहे।
- ऑनलाइन प्रशिक्षण प्राप्त करना, ऑनलाइन फीडबैक एवं अन्य आवश्यक ऑनलाइन कार्य, जिससे कुछ शिक्षक जो प्रोद्योगिकी फ्रेंडली नहीं थे उनको काफी परेशानी का सामना करना पड़ा।
- गांवों में बिजली की पूरे समय उपलब्धता न होने के कारण ऑनलाइन पढ़ने पढ़ाने एवं प्रशिक्षण प्राप्त करने में कठिनाइयाँ रही।
- शिक्षकों की डयूटी कोरोना फ्रंट लाइन वर्कर के रूप में लगी रही जिसमें वो अपना शिक्षकीय कार्य के साथ राशन वितरण, टीकाकरण अभियान आदि में डयूटी करते रहे।

कोविड काल में चुनौती-पूर्ण शिक्षण पर शिक्षक के अनुभव -

कोविड-19 काल इस सदी का अब तक का सबसे दुर्गम एवं चुनौती पूर्ण समय रहा है। इस महामारी में जहां एक ओर जन-धन की अपार हानि हुई वहीं दूसरी ओर शिक्षण कार्य भी बहुत बुरी तरह प्रभावित हुआ है, हालांकि इसकी क्षति पूर्ति हेतु विभिन्न कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। व्हाट्सएप पर RSK द्वारा भेजी गई शिक्षण सामग्रियों की लिंक मेरे द्वारा लगातार समय पर भेजी गई एवं फोन द्वारा नियमित संपर्क कर पालकों के माध्यम से विद्यार्थियों को लगातार पढ़ने हेतु प्रेरित किया गया, वे बच्चे जिनके पास एंड्रायड मोबाईल या मोबाईल की व्यवस्था ही नहीं थी उनसे उनके पड़ोसियों के या अन्य विद्यार्थियों के मोबाईल नम्बर प्राप्त कर संपर्क किया।

हमारा घर हमारा विद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चों से गृह संपर्क के दौरान पता चला कि DigiLEP की शिक्षण सामग्री विद्यार्थी नहीं देख पा रहे हैं, क्योंकि मेरे द्वारा सामग्री समय पर भेजी जाने के बावजूद पालक बच्चों को समय पर मोबाईल उपलब्ध नहीं कराते। वे खेत पर चले जाते हैं या अपने अन्य कामों के दौरान मोबाईल अपने साथ ले जाते थे। यहां दीक्षा एप पर लिए प्रशिक्षणों ने बहुत मदद की और कुछ पालकों को समझाने तथा विद्यार्थियों को शिक्षण हेतु मोबाईल फोन उपलब्ध कराने में सफल रहा। इसी दौरान मैंने अपने शिक्षक साथियों के साथ मोहल्ला कक्षा लगाना

प्रारंभ किया, जहां हम इन सभी विद्यार्थियों को जोड़ने का प्रयास कर रहे थे जो अभी तथा शिक्षण कार्यों में शामिल नहीं हो पाये थे। लपेट श्याम पट्ट पर तथा विभिन्न गतिविधियों के द्वारा बहुत सारे विद्यार्थियों को अब हम कोविड-19 के नियमों का पालन करते हुए शिक्षण को सफल बनाने का प्रयास कर इस गंभीर चुनौती काल में भी आगे बढ़ रहे थे। मोहल्ला कक्षाओं के दौरान व्हाट्सएप आधारित मूल्यांकन जो प्रति शनिवार सभी विद्यार्थियों को कराने की एक बड़ी चुनौती मेरे समक्ष थी। विद्यार्थियों के पास एन्ड्रायड सेट न होना, इंटरनेट की कमी तथा अन्य ग्रामों से आने वाले विद्यार्थियों तक पहुँच बनाना एक दुष्कर कार्य था। ऐसे समय में सबसे पहले तो उन विद्यार्थियों को चिंहित किया गया जिनके पास एन्ड्रायड फोन व इंटरनेट दोनों रहते हैं, इसके बाद विद्यार्थियों का रजिस्ट्रेशन उनके मोबाईल में कराया तथा जिनके मोबाईल आधारित मूल्यांकन का प्रतिशत 50 प्रतिशत से ज्यादा करने में शिक्षण में आई इन चुनौतियों का सामना करते-करते सीखा कि काम मुश्किल अवश्य होते हैं, लेकिन करने में यदि जुट जाएं तो नामुमकिन नहीं होते। वर्तमान समय में बच्चे धीरे-धीरे ही सही, अध्ययन कार्य में पुनः रूचि लेने लगे हैं।

गतिविधि

कोविड काल के दौरान बच्चों को पढ़ाने में आपके क्या अनुभव रहे? संक्षेप में वर्णन कीजिए।

जवाब लिखें

.....

.....

.....

भाग - 2 :

हितधारकों से संवाद और उनको प्रेरित करना तथा विद्यालय को पुनः खोलने में विभिन्न चुनौतियों को केस स्टडी के माध्यम से समझना

उद्देश्य :

1. कोविड -19 की परिस्थिति में गाइडलाइन के अनुसार स्कूल संचालन की तैयारी को सुनिश्चित करना।
2. हितधारकों से संवाद और उनको प्रेरित करना।
3. विद्यालय को पुनः खोलने की प्रकिया में विभिन्न चुनौतियों को जानना

2.1 कोविड -19 की परिस्थिति में गाइडलाइन के अनुसार स्कूल संचालन की तैयारी को सुनिश्चित करना

स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा जारी गाइडलाइन-

स्वास्थ्य मंत्रालय ने स्कूल फिर से खोलने के लिए एस ओ पी (Standard Operating Procedure) जारी किया है। इस दस्तावेज में विद्यार्थियों के लिए कक्षाएं आयोजित करने के लिए जरूरी उपायों और दिशा निर्देशों का विवरण है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी गाइडलाइन के अनुसार-

स्कूलों को टीचिंग और नॉन-टीचिंग स्टॉफ के लिए 50 प्रतिशत क्षमता के हिसाब से खोलने की अनुमति होगी। साथ ही, छात्रों को स्वैच्छिक आधार पर स्कूल जाने की अनुमति दी जाएगी। मंत्रालय ने आगे कहा है कि स्कूलों को यह सुनिश्चित करना होगा कि इस अवधि में ऑनलाइन कक्षाएं और वर्चुअल सेशन जारी रहें और उन्हें प्रोत्साहित किया जाए। इसके अलावा एस ओ पी में यह भी कहा गया, कि छात्रों को स्कूल जाने के लिए माता-पिता की सहमति के तहत अनुमति दी जाएगी।

विद्यालय प्रवेश के लिए एस ओ पी -

- उन्ही लोगों को परिसर में आने की अनुमति दी गई है, जिन्हें कोविड 19 टीकाकरण का सर्टिफिकेट मिला है।
- कंटेनमेंट जोन में स्टूडेंट्स/टीचर और स्टॉफ को स्कूल जाने की अनुमति नहीं है। छात्रों और शिक्षकों को सलाह दी जाती है कि वे स्कूल जाते समय कंटेनमेंट ज़ोन से न जाएं।
- लॉकडाउन के दौरान जिन स्कूलों को क्वरंटीन सेंटर के तौर पर इस्तेमाल किया गया था उन्हें WHO द्वारा जारी SOPs के अनुसार ठीक से सैनिटाइज और अच्छे तरीके से साफ किया जाना चाहिए।
- सामान्य निवारक उपाय जैसे फिजिकल डिस्टेंसिंग, फेस कवर / मास्क का अनिवार्य उपयोग हो, बार-बार हाथ धोना और स्वास्थ्य की सेल्फ मॉनिटरिंग करना।
- श्वसन लेबल का सख्ती से पालन किया जाए। इसमें टिश्यू / रूमाल / फ्लेक्स कोहनी के साथ खाँसी / छींकने के दौरान किसी के मुंह और नाक को ढंकने का सख्त प्रैक्टिस शामिल है और उपयोग किए गए टिश्यू को ठीक

से फेंके। इसके साथ किसी को भी थूकना सख्त वर्जित है।

- दिशानिर्देश में स्कूल परिसर के भीतर खुले स्थानों पर क्लास संचालित करने के सुझाव दिए गए हैं। मौसम को देखते हुए ऐसा कर सकते हैं।
- एयर-कंडीशनिंग / वेंटिलेशन के लिए, सीपीडब्ल्यूडी के दिशानिर्देशों का पालन किया जाएगा जो इस बात पर जोर देता है कि सभी एयर कंडीशनिंग उपकरणों की तापमान सेटिंग 24-30^{o} C की सीमा में होनी चाहिए। सापेक्ष आर्द्रता 40-70 प्रतिशत, सेवन की सीमा में होनी चाहिए। ताजी हवा जितना संभव हो उतना होना चाहिए और क्रॉस वेंटिलेशन पर्याप्त होना चाहिए।
- शालेय गतिविधियाँ को फिर से शुरू करने से पहले, प्रयोगशालाओं, अन्य सामान्य उपयोगिता क्षेत्रों सहित शिक्षण / प्रदर्शन आदि को सही तरीके से साफ किया जाना चाहिए। अक्सर स्पर्श की गई सतहों पर विशेष ध्यान देने के साथ 1 प्रतिशत सोडियम हाइपोक्लोराइट घोल के साथ साफ किया जाएगा।
- प्रवेश द्वार पर हाथ स्वच्छता (सैनिटाइज़र डिस्पेंसर) और थर्मल स्क्रीनिंग प्रावधान अनिवार्य है। अगर संभव हो तो स्कूल में एंट्री और एग्जिट के लिए कई फाटक/ अलग द्वार उपयोग प्रदान करने की सलाह दी गई है। विद्यालय में विजिटर्स के सख्त विनियमन को बनाए रखा जाना चाहिए।
- रोगसूचक व्यक्ति - शिक्षकों / कर्मचारियों / छात्रों को स्कूलों के अंदर नहीं जाने दिया जाएगा और उन्हें निकटतम स्वास्थ्य केंद्र में भेजा जाएगा।

कक्षाएं संचालित करने के लिए एसओपी

- कुर्सियों, डेस्क आदि के बीच 6 फीट की दूरी सुनिश्चित करने के लिए बैठने की व्यवस्था।
- कक्षा के परिसर की पर्याप्त फिजिकल डिस्टेंस और कीटाणुशोधन के लिए अनुमति देने के लिए, अलग-अलग समय स्लॉट के साथ गाइडेंस एक्टिविटी पर अधिक ध्यान रखने की सलाह दी गई है।
- टीचिंग फैकल्टी यह सुनिश्चित करेगा कि वे स्वयं और विद्यार्थियों की टीचिंग / एक्टिविटी के संचालन के दौरान मास्क पहनते हैं।
- विद्यार्थियों के बीच नोटबुक, पेन / पेंसिल, इरेज़र, पानी की बोतल आदि जैसी वस्तुओं को शेयर करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।
- सामान्य क्षेत्रों में एक्टिविटी को उचित दूरी बनाए रखते हुए संचालित करना होगा।
- एक्टिविटी जैसे असेंबली, खेल एक्टिविटी आदि जो अधिक भीड़ का कारण बन सकती हैं, उन्हें इस समय के लिए अनुमति नहीं दी जाएगी।
- इसके अलावा स्विमिंग पूल (जहां भी लागू हो), स्कूल कैफेटेरिया बंद रहेंगे।

इन गाइडलाइन्स के अलावा, एसओपी उन प्रक्रियाओं को भी सूचीबद्ध करता है जिनका किसी विद्यार्थियों या शिक्षक / कर्मचारियों के स्कूलों में सूचक होने की स्थिति में पालन किया जाना है। स्कूलों को पर्याप्त व्यक्तिगत सुरक्षा उपायों जैसे मास्क और गलव्स, सैनिटाइजर आदि की व्यवस्था करने का भी निर्देश दिया गया है। अल्कोहल वाइप्स या 1 प्रतिशत सोडियम हाइपोक्लोराइट सॉल्यूशंस और डिस्पोजेबल पेपर टॉवल आदि।

2.2 हितधारकों से संवाद और उनको प्रेरित करना

(A) समुदाय से संवाद

विद्यालय तैयारी प्रक्रिया में समुदाय सहभागिता के निम्नलिखित लाभ होंगे –

- समुदाय सहभागिता से विद्यालय पुनः खोलने में स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आने पर स्थानीय समुदाय के सहयोग से समाधान किया जा सकता है।

विद्यालय तैयारी की सूचना निम्नानुसार सुनिश्चित करना –

- विद्यालयों को तैयारी हेतु दूरसंचार के माध्यम जैसे Radio, TV, Mobil Phone इत्यादि द्वारा प्रचार प्रसार किया जाए।
- समुदाय में किसी भी प्रकार की भ्रांतियां न फैले इस बात का भी विशेष ध्यान देना चाहिए और मुख्य संदेश कोरोना के प्रति हमारे भय को दूर करने में सहायक होना चाहिए।
- समुदाय को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके आसपास की परिस्थितियां और परिवेश के मुताबिक व क्षेत्र के सम्मानीय व्यक्तियों की सलाह को ध्यान में रखते हुए विद्यालय पुनः खोलने के प्रचार प्रसार करना चाहिए।

(B) अभिभावकों से संवाद –

शिक्षिका द्वारा अभिभावकों को बताया गया कि कोविड-19 की गाइड लाइन के अनुसार विद्यालय को पुनः खोला जा रहा है एवं निम्न व्यवस्था की गई है जैसे -

- पूरे स्कूल भवन का सेनेटाईजेशन किया गया है।
- 50 प्रतिशत क्षमता के साथ विद्यार्थियों की बैठक व्यवस्था रखी है।
- विद्यार्थियों को लंच लेकर भेजिएगा। मध्यान्ह भोजन का सूखा राशन दिया जा रहा है।
- कोविड -19 के सुरक्षा साधनों को स्वयं रखकर उचित उपयोग करे और सामाजिक दूरी का ध्यान रखे।

शिक्षिका ने अभिभावकों को उपरोक्त जानकारी देकर विद्यार्थियों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित किया।

(C) सरपंच/ग्राम के माननीय व्यक्तियों से संवाद –

शिक्षिका द्वारा स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी गाइडलाइन की जानकारी सरपंच एवं पंचायत सदस्यों को दी गई। सरपंच जी ने बताया कि जगह-जगह स्कूल खुलने की तैयारी हो रही है। पंचायत के ग्रुप से स्कूल खुलने के आदेश की जानकारी मिली है। जिसकी गांव में डोडी (डुग्गी) पिटवाकर पूरे गांव को खबर कर दी है। शिक्षिका द्वारा पंचायत से पालकों को प्रोत्साहित करने का भी आग्रह किया गया।

2.3 विद्यालय को पुनः खोलने की प्रकिया में विभिन्न चुनौतियों को जानना

विद्यालय को पुनः खोलने की प्रक्रिया में विद्यालय प्रमुख के समक्ष आने वाली चुनौतियों को हम एक केस स्टडी के माध्यम से समझेंगे -

केस स्टडी - भाग 1

झीलों की नगरी भोपाल के सैन्य क्षेत्र में हरे भरे वृक्षों और हरियाली के बीच स्थित है, शा.मा. विद्यालय सुल्तानियां लाईन शाहजहानाबाद, जिसमें 07 शिक्षिका कार्यरत हैं एवं 103 विद्यार्थी कक्षा 1 से 8 तक अध्ययनरत हैं। इस स्कूल की स्थापना सैनिकों के विद्यार्थियों को शिक्षा देने हेतु की गई थी। सेना द्वारा स्वयं का स्कूल बना लिए जाने के कारण वर्तमान में इस विद्यालय में सैन्य क्षेत्र से लगी गरीब बस्ती के बच्चे ही अध्ययनरत हैं। प्रधानाध्यापिका श्रीमती सुनीता गौड़ के अथक प्रयासों से राज्य सरकार को राशि हेतु तथा सैन्य अधिकारियों को मरम्मत हेतु तैयार करने में सफलता प्राप्त की। फलस्वरूप जीर्ण-शीर्ण पुराने भवन की दीवारें, फाल्स सीलिंग, फर्श, शौचालय आदि की मरम्मत का कार्य शुरू हुआ।

विद्यालय में उपरोक्त मरम्मत का कार्य चल ही रहा था एवं साथ-साथ प्रधानाध्यापिका के नेतृत्व में साथी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय की व्यवस्थाएं एवं साज-सज्जा का कार्य भी शुरू किया। तभी Covid-19 के कारण लॉकडाउन लग गया, जिसके कारण विद्यालय लंबे समय तक बंद रहा। कोविड-19 का वेक्सीनेशन आने एवं शासन के सघन टीकाकरण अभियान से शासन स्तर से शैक्षक गतिवधियां को क्रमशः संचालित करने के निर्देश दिये गये, जैसे ही प्रधानाध्यापिका एवं शिक्षिका विद्यालय पहुंचे, सैन्य क्षेत्र में बाहरी व्यक्ति का प्रवेश Covid-19 के कारण वर्जित था।

इस बड़ी चुनौती के लिये प्रधानाध्यापिका द्वारा सेना के कमांडर से विद्यार्थियों की शिक्षा एवं भविष्य पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने हेतु आग्रह किया। तब जाकर सेना ने अपने चेक पोस्ट पर विद्यार्थियों की सूची रखी एवं सूची अनुसार ही स्टाफ एवं विद्यार्थियों को सैन्य क्षेत्र में आने की अनुमति दी। प्रधानाध्यापिका द्वारा विद्यार्थियों को अभ्यास पुस्तक, राशन आदि स्वयं की कार में रखकर मोहल्ले में जाकर बांटा।

दूसरी चुनौती यह थी कि विद्यालय लंबे समय तक बंद रहने के कारण विद्यालय परिसर में घुटनों तक घास झाड़ियां उग आई थीं। सैन्य क्षेत्र होने के कारण बसाहट काफी दूर-दूर होने से विद्यालय परिसर एवं भवन में सांप एवं जहरीले जंतुओं द्वारा डेरा जमा लिया था। ऐसी स्थिति में मजदूरों ने भी घास झाड़ियाँ काटने से मना कर दिया था।

प्रधानाध्यापिका ने सेना कमांडर से पुनः अनुरोध करके मशीन द्वारा घास कटवा कर परिसर को साफ करवाया। भवन में जहां-जहां मरम्मत का काम छूट गया था, लंबी अवधि तक यूं ही छूटने के कारण फर्श के टाईल्स, फाल्स सीलिंग उखड़ गये थे, इन सब टूट-फूट की मरम्मत कार्य को सुनिश्चित किया गया। स्कूल तैयारी की सूचना के बावजूद अभिभावक विद्यार्थियों को विद्यालय नहीं भेज रहे थे। विद्यालय परिवार द्वारा अभिभावकों एवं विद्यार्थियों को मनोवैज्ञानिक रूप से विद्यालय आने हेतु तैयार किया एवं विश्वास दिलाया कि विद्यालय का सुरक्षित शिक्षण वातावरण है। आप कोविड सुरक्षा के उपाय अपना कर विद्यार्थियों को शिक्षण हेतु विद्यालय भेज सकते हैं। इतने लंबे भय एवं आशंका के दौर से गुजर कर विद्यार्थियों को विद्यालय में एकदम से सिर्फ पढ़ाया जाना उचित नहीं था। अतः उनके लिए विद्यालय को और विद्यालय में अन्य गतिवधियों को आकर्षक बनाने की योजना बनाई।

एक चुनौती तो भी ये रही कि कोविड-19 के कारण लॉकडाउन हुआ। परिणामस्वरूप बहुत सारे अभिभावकों की आर्थिक स्थिति बहुत बिगड़ गई, जिससे उसका सीधा असर विद्यार्थियों की पढ़ाई पर पड़ रहा है। अभिभावक अन्य व्यवस्था को प्राथमिकता दे रहे हैं। विद्यार्थियों को विद्यालय भेजने में रूचि नहीं ले रहे, क्योंकि बच्चें घर में रहने में तो घर की निगरानी एवं छोटे मोटे काम भी कर लेते थे।

विद्यालय परिसर की साफ सफाई करवाना, कक्षाएं व्यवस्थित करना, स्वच्छ पानी, शौचालय, खेल का मैदान आदि को उपयोग हेतु तैयार करना भी एक चुनौती ही रही है।

पूरे लॉकडाउन समय अवधि में शिक्षिका भी विद्यार्थियों को WhatsApp आधारित शिक्षण, राशन, वितरण मोहल्ला क्लास, कोविड डयूटी आदि में लगे रहे । पूरे समय मानसिक रूप से जुड़े रहे। अब उनके बालकों को विद्यालय में भेजने हेतु अभिभावकों को प्ररित करने के लिये घर-घर सर्वे में लगाया एवं अपनी-अपनी कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्तर की जानकारियां को अद्यतन करने का कार्य प्रशिक्षण प्लान आदि कार्य किए।

सबसे पहले, स्वयं को भी मानसिक रूप से तैयार करना, कक्षा में इतने बच्चे आएंगे क्या वो कोविड-19 संक्रमण के सुरक्षा मापदण्डों का पालन करेगें, उनकी स्वच्छता आदतों को पालन करना, विद्यालय में पढ़ते एवं लंच के समय क्या सोशल डिस्टेन्स को ध्यान में रख सकेगें। इतने दिन बच्चे घर में अपनी मर्जी से पढ़ते रहे। बहुत से बच्चे तो पढाई में बहुत पिछड़ गये हैं, क्योंकि बच्चे भी घरों मे डरे सहमे रहे। वो अपनी मूल पढ़ाई में ज्यादा ध्यान नहीं दे पाये। उनकी अधिगम क्षति हुई है। साथ ही उनको अगली कक्षा में प्रोन्नत भी कर दिया। विद्यार्थियों का कक्षा अनुरूप शिक्षण एवं अन्य शासकीय उत्तरदायित्वों के मध्य समन्वय करना चुनौती है। विद्यार्थियों को विद्यालय मे पुनः भेजने हेतु अभिभावकों को प्रेरित करने के लिये घर घर सम्पर्क करना भी चुनौती रही है।

विचारणीय प्रश्न

प्र.1. एक प्रधान अध्यापक के रूप मे लम्बे समय से बंद अपने विद्यालय को पुनः खोलने हेतु आप क्या तैयारी करेगें?

.....

.....

.....

प्र.2. विद्यालय के शिक्षकों को विद्यार्थियों के साथ भावनात्मक सपोर्ट हेतु किस तरह प्रेरित करेगें?

.....

.....

.....

प्र.3. विद्यार्थियों को कक्षा अनुरूप पढ़ाई के स्तर पर लाने हेतु आपकी क्या योजना होगी?

.....

.....

.....

प्र.4. विद्यार्थियों को पुनः विद्यालय में भेजने में अभिभावकों के समक्ष आने वाली परेशानियों को लिखिए?

.....

.....

.....

भाग - 3 :
विद्यालय को पुनः खोलने की चुनौतियों का समाधान एवं सीखने-सिखाने की रणनीति तैयार करना

उद्देश्य :

1. विद्यालय को पुनः खोलने की चुनौतियों के समाधान हेतु किए गए प्रयास।
2. सीखने सिखाने की रणनीति तैयार करना।
3. शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के सुदृढ़ीकरण हेतु किए जाने वाले प्रयास।

3.1 विद्यालय को पुनः खोलने की चुनौतियों के समाधान हेतु किए गए प्रयास –

विद्यालय को पुनः खोलने की चुनौतियों के समाधान हेतु किए गए प्रयास को केस स्टडी के माध्यम से समझेंगे -

केस स्टडी भाग – 2

विद्यालय को पुनः खोलने की चुनौतियों के समाधान हेतु किए गए प्रयास

केस स्टडी के भाग 1 में देखा कि प्रधान अध्यापक को विद्यालय तैयारी में किन-किन चुनौती का सामना करना पड़ा। प्रधानाध्यापिका के कुशल नेतृत्व एवं जुझारू कार्य शैली से विद्यालय की केस स्टडी के प्रथम भाग में उल्लेखित चुनौती का किस तरह समाधान कर विद्यालय तैयारी हेतु प्रयास इस भाग में समझेंगे -

प्रधानाध्यापिका ने सबसे पहले विद्यालय में भौतिक सुविधा एवं मरम्मत को गति प्रदान की है। विद्यालय परिवार ने हमारा घर हमारा विद्यालय अन्तर्गत घर-घर सर्वे के माध्यम से अभिभावक और विद्यार्थियों के मन में कोरोना के भय को निकाला एवं पठन-पाठन हेतु सुरक्षित शैक्षणिक वातावतरण के प्रति अभिभावकों को विश्वास दिलाया, फलस्वरूप अभिभावक विद्यार्थियों को विद्यालय भेजने में सहमत हुए। विद्यालय में Covid सुरक्षा मानकों को अपना कर संक्षिप्त प्रार्थना उपरांत PT करवाना सुनिश्चित किया। विद्यालय पुनः आरंभ करने में विद्यार्थियों के साथ भावनात्मक रूप से संबल प्रदान करने हेतु समस्त शिक्षकों को सीएम- राइज के मानसिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण श्रृंखला को शिक्षिका डायरी से पढ़कर विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य एवं परामर्श (Mental Health & Counselling) अनुसार व्यवहार किया गया। गरीबी के कारण हताश हुए अभिभावकों द्वारा अपने विद्यार्थियों को बाल श्रमिक के रूप में काम पर न भेजने हेतु जागरूक किया कि बाल श्रमिक बच्चे सामान्य रूप से शारीरिक तथा बौद्धिक दृष्टिकोण से पिछड़ जाते हैं, जिससे भविष्य में अच्छे रोजगार प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं।

शैक्षणिक उपलब्धि बढ़ाने हेतु प्रधानाध्यापिका द्वारा समय सारणी के साथ-साथ समस्त स्टाफ का क्रियाकलाप कैलेण्डर बनाया, जिसमें पढ़ने-पढ़ाने, TLM निर्माण, विद्यार्थियों संपर्क आदि कार्यों का ब्यौरा अंकित करने हेतु बनाया गया, जिसमें शिक्षिका के छोटे से छोटे प्रयास से लेकर बड़ी उपलब्धि को स्थान दिया।

कोरोना का संक्रमण सबसे ज्यादा स्वच्छता की आदतों पर निर्भर करता है, अतः विद्यालय में विद्यार्थियों के प्रवेश करते

ही तापमान लेना एवं हाथ सेनेटाईज करवाने की व्यवस्था सुनिश्चित की। बच्चे विद्यालय अवधि में हाथ धो सकें इस हेतु सुविधा युक्त हाथ धुलाई स्थान (Hand wash Station) स्थापित किया गया। शिक्षकों द्वारा प्रत्येक विद्यार्थियों को हाथ धोने के स्टेप सिखाये गये। विद्यालय में सेनेटाईजर उपलब्ध कराया। विद्यार्थियों द्वारा बार-बार आंख, नाक, मुंह पर हाथ लगाने की आदत को सुधारने हेतु प्रेरित किया गया।

विद्यालय वातावरण को भय मुक्त एवं आकर्षक रूप देने हेतु विद्यार्थियों से रचनात्मक एवं रूचिकर गतिविधियों के अन्तर्गत स्वच्छता अभियान के पोस्टर बनवाना, बागवानी द्वारा विज्ञान शिक्षण एवं विद्यालय में जुड़ाव हेतु कार्य करवाया, विद्यार्थियों ने पत्तियों से आकर्षक कलाकृति बनाई इससे विद्यार्थियों में प्रकृति के संरक्षण हेतु संवेदन शीलता विकसित हुई। इन सब गतिविधियों में विद्यार्थियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया एवं कोविड-19 के भय से ध्यान हटा।

शिक्षण की सबसे महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक गतिविधि पाठ्यपुस्तक एवं अन्य पुस्तकों को पढ़ना लिखना है। इस हेतु विद्यार्थियों में पाठय पुस्तकों के प्रति रूचि पैदा करना एवं पढ़ने की आदतों को प्रोत्साहित करने, शब्द ज्ञान बढ़ाने, कल्पना शक्ति बढ़ाने आदि के लिए पुस्तकालय की पुस्तकें पढ़ने हेतु प्रेरित किया।

सर्वविदित है कि लॉकडाउन के कारण बच्चे अपनी मूल पढ़ाई के स्तर से नीचे आ गए हैं और उनको अगली कक्षा में प्रोन्नत भी कर दिया गया है। जिससे उनके अधिगम की प्रक्रिया में एक अन्तराल आ गया है। साथ ही साथ अधिगम की क्षति हुई हैं जिसको दूर करने के लिए दक्षता उन्नयन, दक्षता उन्नयन बूस्टर कक्षाओं का आयोजन, नेस की तैयारी, माक टेस्ट, साप्ताहिक अभ्यास, प्रश्न के अनुसार अभ्यास सुनिश्चित एवं प्रयास अभ्यास पुस्तिका में अभ्यास कार्य आदि द्वारा शैक्षणिक व्यवस्था सुनिश्चित की गयी। इसके साथ ही विद्यार्थियों को घर में भी पढ़ने हेतु अभ्यास प्रश्न देकर प्रेरित किया जा रहा हैं। राज्य शिक्षा केंद्र से प्राप्त अकादमिक योजना अनुसार शिक्षण व्यवस्था सुनिश्चित की गयी है।

प्रधानाध्यापिका एवं शिक्षिका द्वारा कक्षा शिक्षण हेतु विषयवार अतिरिक्त प्रयास निम्नानुसार किये गये –

कक्षा शिक्षण को रुचिकर एवं आनंददायी बनाने हेतु प्रधानाध्यापिका द्वारा विभिन्न अवधारणाओं पर आधारित शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण किया गया। इसकी झलक हम वीडियो में देखेंगे-

गतिविधि

प्र:1 एक प्रधान अध्यापक के रूप में लंबे समय से बंद विद्यालय को पुनः खोलने हेतु कोई 4 तैयारियां लिखिए?

.....

.....

.....

प्रः2 विद्यालय के शिक्षकों को विद्यार्थियों के साथ भावनात्मक रूप से संबल हेतु किस तरह प्रेरित करेंगे?

.....

.....

.....

प्रः3 विद्यार्थियों में अधिगम क्षति को कम करने हेतु आपकी क्या योजना होगी?

.....

.....

.....

प्रः4 विद्यार्थियों को पुनः विद्यालय में भेजने में अभिभावकों के समझ आने वाली सामान्य कठिनाइयों को लिखें।

.....

.....

.....

विद्यालयों को भौतिक परिवेश के अनुसार व्यवस्थित करना –

- विद्यालय प्रमुख के द्वारा अभिभावकों में Safe Learning वातावरण को realise कराने हेतु SOP के अनुसार विद्यालय परिसर की संपूर्ण साफ सफाई, सेनेटाईजेशन व्यवस्था को आवश्यक सुनिश्चित करना। विद्यार्थियों के साथ मिलकर Covid-19 के Sop अनुसार कुछ नियम बताकर विद्यालय परिसर में कई स्थानों पर चस्पा करना। विद्यालय में Hand Wash साबुन तथा स्वच्छ पानी की उपलब्धता बनाये रखना एवं Hand Wash station बनाना।

विद्यार्थियों एवं अन्य लोगों के विद्यालय परिसर में प्रवेश करते समय वे मास्क पहने हों, की निगरानी करना तथा बुखार व खांसी की जाँच (Screening) की व्यवस्था रखना व विद्यार्थियों की यदि बुखार होने की जानकारी सामने आये तो उनके अभिभावकों को सूचना देना साथ ही उन्हें निकट के स्वास्थ्य केन्द्र में ले जाने की सलाह देना। विद्यालय की प्रत्येक कक्षा में 50 प्रतिशत विद्यार्थियों उपस्थिति के अनुसार समय सारणी का निर्माण एवं सामाजिक दूरी (Social Distancing) के साथ बैठक व्यवस्था सुनिश्चित करना। व्यवस्थाओं हेतु शिक्षण एवं बाल केबिनेट के सदस्यों की टीम बनाना।

- स्कूल बंद रहने के कारण विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि जैसे पाठ्यपुस्तक पढ़ना, संवाद लिखना आदि के स्तरों पर गिरावट दर्ज की गई। बेस लाइन टेस्ट (Base line test) के आधार पर 8वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के दो समूह-अंकुर व तरूण बनाना। शासन की नीति अनुसार पाठ्यक्रम को 40 प्रतिशत कम व सरल किया गया। उसके अनुसार पाठ्यपुस्तकों से लर्निंग आउट-कम्स (Learning outcomes) को चिंहित करना एवं कक्षाएं एक साथ संचालित न कर थोड़ा अंतराल से लगाना। शैक्षणिक गतिविधियों को लचीलापन अपना कर संचालित करना।

लॉकडाउन के कारण विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति उदासीनता दर्ज के साथ ही, Learning gap में उसके सुधार हेतु दक्षता उन्नयन एवं ब्रिज कोर्स, दक्षता उन्नयन बूस्टर, नेस (NAS) की तैयारी सुनिश्चित करना।

विद्यालय में विद्यार्थियों को वर्तमान दिशा-निर्देशों के अनुसार विद्यालय में मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था को स्थगित किया गया है, इसके स्थान पर विद्यार्थियों को सूखा राशन वितरित किया गया है।

विद्यार्थियों में कक्षा शिक्षण के अभाव के कारण कक्षा अनुशासन प्रभावित हुआ है।

अतिरिक्त तैयारियों के जानने योग्य बिंदु –

- बीमार पड़ने पर विद्यार्थियों और कर्मचारियों को घर पर रहने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए उपस्थिति और चिकित्सा अवकाश की लचीली नीतियां बनाई और लागू की जा सकती हैं।
- यदि कोई कोविड का संदिग्ध मामला संज्ञान में आता है तो प्रोटोकॉल के अनुसार कार्रवाई करना।
- विद्यार्थियों को पर्यावरण, भाषा, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और कला विषयों को अध्यापन कराने के दौरान विभिन्न अवधारणाओं को एकीकृत करके कोविड के बारे में संवेदन शीलता विकसित करना।
- शिक्षकों और विद्यार्थियों की रूचि बढ़ाने के लिए डिजिटल और ऑन लाईन प्रशिक्षण जैसे CM-Rise, NI-SHTHA, प्रशिक्षण आदि की निर्देशित गतिविधियों को संपन्न कराना।
- शिक्षार्थियों द्वारा अभ्यास लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए रचनात्मक मूल्यांकन (Formetive Assesment) करना। शैक्षणिक उपलब्धि अनुसार विषय कक्षा एवं विषयवार कक्षाएं।
- विद्यालय त्यागी विद्यार्थियों की उपस्थिति सुनिश्चित करने हेतु स्कूल वापसी अभियान या हम नहीं रूकेंगे, कार्यक्रम संचालित करना।

3.2 सीखने सिखाने की रणनीति तैयार करना

सीखने सिखाने की रणनीति के चरण –

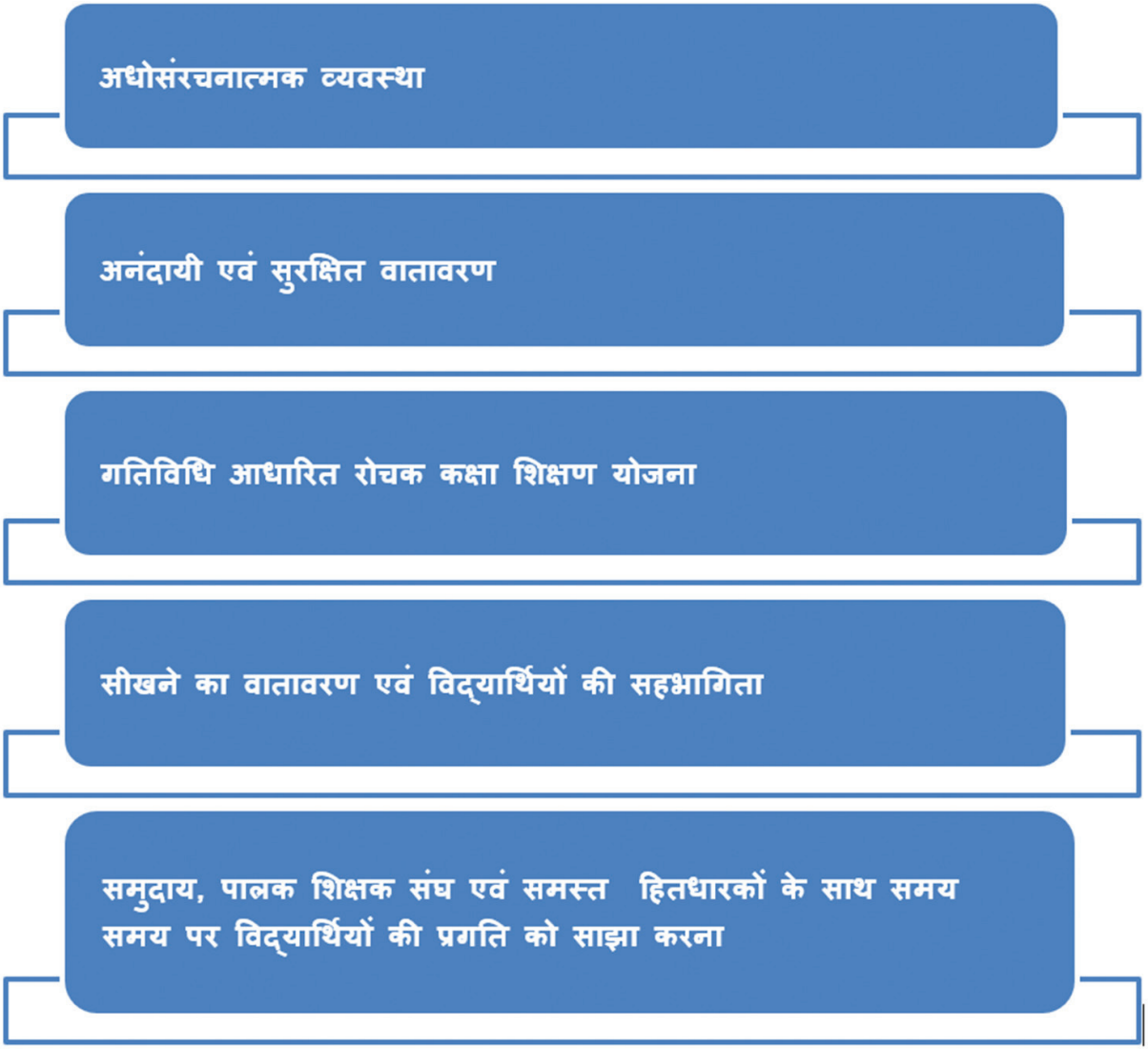

3.3 शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के सुदृढ़ीकरण हेतु किए जाने वाले प्रयास –

कोविड- 19 के कारण विद्यालय लंबे समय तक बंद रहे, इस दौरान शिक्षक एवं विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति भी काफी प्रभावित हुई है। शिक्षक स्वयं तथा विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को करने हेतु CM RISE के प्रशिक्षण का पुनः अध्ययन कर उक्त हेतु उसका उपयोग करेंगे-

1. मानसिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण शृंखला भाग-1, भाग-2, भाग-3
2. बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण शृंखला भाग-1, भाग-2, भाग-3, भाग-4

विद्यालय को को पुनः खोलने में आने वाली चुनौतियां एवं उनके समाधान –

क्र.	चुनौतियां	समाधान हेतु उठाए गए कदम
1.	कोरोना की तीसरी लहर की आशंका के बीच अभिभावकों को उनके विद्यार्थियों को विद्यालय भेजने हेतु मानसिक तौर पर तैयार करना।	विद्यालय प्रमुख एवं शिक्षकों द्वारा यह कार्य घर-घर संपर्क एवं मो/वाटसएप सन्देश द्वारा प्रेरित करना।
2.	विद्यालयों, शिक्षा के महत्व को अभिभावकों द्वारा न समझाना।	गृह संपर्क द्वारा/ मोहल्ला कक्षा द्वारा स्कूल की शिक्षा के महत्व को समझाना कोविड गाईड लाईन का कैसे पालन करना है, समझाना है।
3.	अभिभावकों द्वारा विद्यार्थियों को पैतृक कार्य एवं घर के अन्य कार्य में संलग्न रखना।	विद्यार्थियों को पैतृक कार्य एवं पढ़ाई के मध्य संतुलन स्थापित करने हेतु प्रेरित करना।
4.	अधिगम क्षति को कम करना।	विद्यार्थियों को पूर्व कक्षा के अनुसार शिक्षण कराना तथा उन में विश्वास जगाना आदि।
5.	परम्परागत शिक्षण के तरीकों को आकर्षक बनाना।	प्रधान अध्यापक एवं शिक्षकों द्वारा स्वच्छता अभियान, डर को दूर करना, बागवानी, पुस्तक का जिज्ञासा के रूप में उपयोग, TLM बनाना।

आपके विचार में

1. कोविड-19 महामारी के कारण स्कूल बंद होने पर आपको शिक्षण कार्य में कोन-कौन सी चुनौतियों का सामना करना पड़ा ?

.....

.....

.....

2. एक प्रधानाध्यापक होने के नाते विद्यालय (sop) की तैयारी हेतु आपके क्या उत्तरदायित्व हो सकते हैं ? कोई तीन उत्तरदायित्वों को लिखिए।

.....

.....

.....

बच्चों की शैक्षणिक संलग्नता और अधिगम स्तर को बनाये रखना महत्त्वपूर्ण है। विद्यालयों के वातावरण में बच्चों को गणित विज्ञान, भाषा व अन्य विषयों के साथ -साथ सामाजिक संबंधों और परस्पर व्यवहार करते हुए एक अच्छे नागरिक बनने की शिक्षा भी मिलती है, इसलिए बच्चों का विद्यालय से जुड़े रहना जरूरी है। समस्त पहलुओं को ध्यान में रखते हुए बच्चों के लिए सुरक्षात्मक वातावरण प्रदान करना होगा और सभी हितधारकों के सहयोग से विद्यालय को पुनः खोलकर साथ ही अधिगम की उत्तम रणनीतियों के द्वारा विद्यालयों का पुनः संचालन करना होगा।

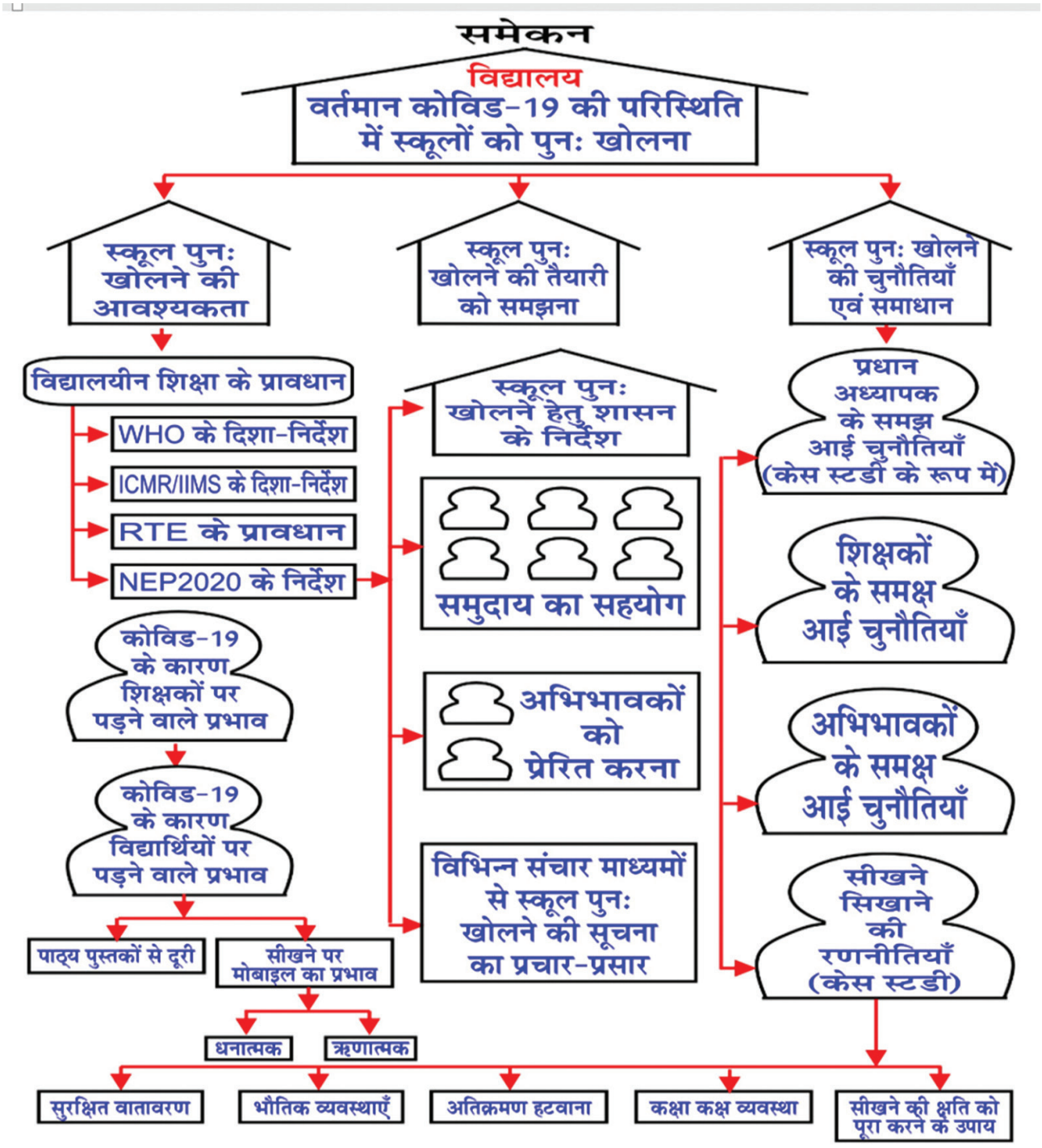

सन्दर्भ सूची

- https://www.tsteachers.in/2020/06/ncert-guidelines-recomondations-to-reopen-schools-due-to-corona-covid19.html
- https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/SOP_Guidelines_for_reopening_schools.pdf
- https://timesofindia.indiatimes.com/city/bengaluru/school-reopening-parents-reluctant-institutions-in-bengaluru-opt-to-wait/articleshow/87269112.cms
- https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/SOP_Guidelines_for_reopening_schools.pdf
- https://www.momjunction.com/hindi/bacho-ko-mobile-se-nuksan-hanikarak-kaise-dur-rakhe/
- https://www.shikshaniti.com/2020/08/standards-for-schooling-and-certification.html

---

लेखक का नाम

अंजुम आरा

निशी शर्मा

डाइट भोपाल, म.प्र.

मेंटर/ एक्सपर्ट का नाम

हरीश कुमार मारण

प्रभारी प्रधानाध्यापक

शासकीय माध्यमिक शाला, रतनपुर सड़क, भोपाल

जिला - भोपाल, म.प्र.

मोबाइल- +91 9893553807

ई मेल- harishkumarmaran@gmail.com

❑ ❑ ❑